धरती पर प्राणियों का भविष्य

अभी हाल में ब्रिटिश भौतिक शास्त्री एवं गणितज्ञ स्टीफन हॉकिंग ने संसार को चेताया है कि एक सौ वर्ष पश्चात् मनुष्य को धरती छोड़नी पड़ेगी। वैसे तो स्टीफन हॉकिंग अनेकों अनर्गल घोषणाएं व कल्पनाएं भी करते रहते हैं परन्तु उनकी यह चेतावनी सत्य व तार्किक है। मनुष्यमात्र को इस पर गंभीरता से विचारना चाहिए। उनके अनुसार जलवायु परिवर्तन, धूमकेतु की टक्कर एवं जनसंख्या विस्फोट आदि कारणों से ऐसी स्थिति बनेगी। इस धरती पर प्राणियों का अस्तित्व बचाने हेतु संसार भर के पर्यावरणवेत्ता एवं राष्ट्राध्यक्ष भी चिन्तित दिखाई देते हैं, इतने पर भी वे इस समस्या के मूल कारण पर न तो विचार करते हैं और न ही वे इस पर विचार करना चाहते हैं। धूमकेतु व उल्कापिण्ड की टक्कर की बात मैं नहीं कर रहा परन्तु जलवायु परिवर्तन के लिए यह कथित विकासवादी मनुष्य स्वयं ही उत्तरदायी है। भोगवादी कुसभ्यता में टैक्नोलॉजी की घुड़दौड़ इसका सबसे बड़ा कारण है। हमने विलासिता व भोगों की पूर्ति के लिए जो भी टैक्नोलॉजी विकसित की, उसमें से शायद ही कोई टैक्नोलॉजी दुष्प्रभाव से मुक्त हो। आज टैक्नोलॉजी को व्यवसाय बना दिया गया है। व्यवसायी प्रवृत्ति से बनी टैक्नोलॉजी अपना प्रचार इस ढंग से करती है कि भोगवादी मानव उसे अपनाने के लिए आतुर हो उठता है। **इस मनुष्य को भोगवादी बनाने में तामसी दूषित भोजन, श्रृंगारी-साहित्य-दर्शन व श्रवण की बहुत बड़ी भूमिका है।** मांस-मदिरा व अन्य मादक पदार्थ इसमें और भी वृद्धि करते हैं। **उधर हथियारों की विनाशक दौड़, तामसी, मूर्ख व सनकी लोगों के हाथ में परमाणु हथियार क्या इस सदी को भी पूरी होने देंगे? विज्ञान, टैक्नोलॉजी वा संसाधनों पर अयोग्य, अधार्मिक, तामसी, अज्ञानी व दुष्ट लोगों का अधिकार नहीं होना चाहिए और न ही टैक्नोलॉजी के दुरुपयोग का किसी को भी अधिकार होना चाहिए।** सबको स्वतंत्रता व समानता के अधिकार के स्थान पर धर्मानुसार यथायोग्य व्यवहार की महर्षि दयानन्द की दृष्टि के बिना यह विश्व सुखी नहीं रह सकेगा। वैज्ञानिक जिस टैक्नोलॉजी को आज निरापद मानते हैं, कालान्तर में उसके दुष्प्रभाव प्रकाश में आ जाते हैं। आज मनुष्य पहले तो अपनी विलासिता के लिए टैक्नोलॉजी पर धन व श्रम का अपव्यय करता है फिर उसके दुष्प्रभाव खोजने में धन व श्रम का पुनः अपव्यय करता हुआ अपने विनाश का निरन्तर जाल बुनता चला जा रहा है। सुविधाओं की मरीचिका में फंसा कथित विकासवादी नाना दुविधाओं का संग्रह कर रहा है। ऋषियों व वेदों का अपरिग्रह व्रत आज पिछड़ेपन का प्रतीक माना जाता है। आज जो देश वा व्यक्ति जितने अधिक संसाधनों का उपयोग वा दुरुपयोग करता है, वह उतना ही अधिक विकसित माना जाता है। विकास की यह अवधारणा भावी पीढ़ी के लिए सर्वत्र विष ही विष का संग्रह कर रही है। विकास की यह मृगतृष्णा हमें घोरविनाश की ओर ले जा रही है। मृदा प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, क्या
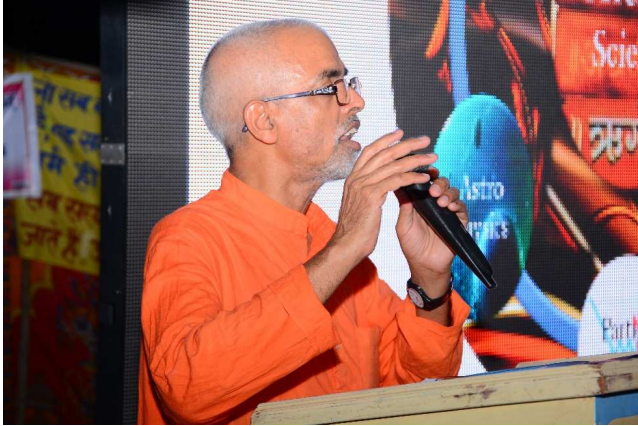
आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, वैदिक वैज्ञानिक

ब्रिटिश भौतिक शास्त्री एवं गणितज्ञ स्टीफन हॉकिंग

धरती के सर्वश्रेष्ठ माने जाने वाले प्राणी मनुष्य की देन नहीं हैं? जो प्रदूषण जितना अदृश्य व सूक्ष्म होता है, वह उतना ही अधिक घातक होता है। इन तीन प्रदूषणों पर भी चिन्ता जताने के अतिरिक्त इस मनुष्य ने क्या उसे दूर करने का कभी प्रयास भी किया है? क्या कोई भोग-विलासिता की सुविधाओं को त्यागने का प्रयास भी कभी करता है? अपने पूर्वजनों को मूर्ख मानने वाला कथित बुद्धिमान् सर्वत्र विष बो रहा है। कोई खाद्य पदार्थ विष से मुक्त नहीं, जल विष से मुक्त नहीं, औषधि दुष्प्रभाव अर्थात् विष से मुक्त नहीं, श्वास हेतु वायु भी विष से मुक्त नहीं, तब जीवन जीने वा विकास की रट लगाने का क्या अर्थ है? क्या हम विचार करेंगे कि कारखानों में जो भी पदार्थ बनते हैं, क्या वे मानव जीवन हेतु वास्तव में अनिवार्य हैं? हमने घरों में जो संसाधनों का संग्रह कर रखा है, उनके बिना क्या हम जी नहीं सकते? क्या रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाओं एवं एलोपैथी दवाओं के कारखानों के पास के वायु, जल व भूमि की विषाक्तता पर क्या कभी कोई सोचता है? हम स्वयं तथा भावी पीढ़ी को विनाश की ओर क्यों ले जा रहे हैं? क्यों हम शारीरिक श्रम का त्याग करके यन्त्रों के दास बन गये हैं? फिर जलवायु प्रदूषण का रोना भी रोने का अभिनय कर रहे हैं? क्या कोई विचारता है कि प्रदूषण रोकने के लिए वह क्या कर सकता है? वह प्रदूषणकारक किन-२ वस्तुओं का त्याग करने का साहस रखता है?

क्या हम यह जानते हैं कि इन तीनों से भी सूक्ष्मतर प्रदूषण विकिरण प्रदूषण है? इन्टरनेट, कम्प्यूटर व मोबाईल के युग में इन्हें विकास का आधार माना जा रहा है। मेरा दृढ़ मत है कि यह **विकिरण प्रदूषण अन्य प्रदूषणों की अपेक्षा इस प्राणिजगत् को विनाश के कगार पर ले जाने में बड़ा कारण बनेगा। यद्यपि मैं अपने विचारों के प्रचार के लिए इसी तकनीक का आश्रय ले रहा हूँ परन्तु मेरा आत्मा इसे स्वीकार नहीं करता।** विश्व की सरकारें इसी तकनीक को प्रसाद की भांति सबको बांटकर स्वयं गौरवान्वित समझ रही हैं। वे नहीं जानतीं कि वे मनुष्य जाति को नष्ट करने का बीज बो रही हैं। जैसे-२ वैज्ञानिक इस पर अनुसंधान करेंगे, उन्हें मेरे कथन का सत्य अवश्य समझ में आयेगा। विभिन्न देशों में हथियारों के तो लाइसेंस बनते हैं लेकिन सर्वविनाशक इस टैक्नोलॉजी के उपयोग की न केवल सबको छूट है अपितु उन्हें प्रोत्साहित भी किया जा रहा है। दुधमुँहे बच्चे कम्प्यूटर सीखने का प्रयास करते हैं और उनके माता-पिता व सरकारें, यह देखकर आनन्दित हो रहे हैं। क्या हम टैक्नोलॉजी के अनावश्यक उपयोग अथवा दुरुपयोग बन्द करने की दिशा में कोई प्रयास नहीं कर सकते, जिससे प्रदूषण में न्यूनता तो आ सके। **आज टैक्नोलॉजी का उपयोग करने वाला प्रत्येक व्यक्ति दैनिक आत्मनिरीक्षण करके देखे कि वह इसका कितना सदुपयोग तथा कितना दुरुपयोग कर रहा है?** यह टैक्नोलॉजी न केवल विकिरण प्रदूषण अपितु मानव के चरित्र व आत्मा को भ्रष्ट करके विश्व में अपराध व आतंकवाद के लिए कितने सुगम मार्ग सुझा रही है? डिजीटल की रट लगाने वाले इसके भावी दुष्परिणामों के बारे में किंचित् भी विचार नहीं करते। इसके दुरुपयोग से किंवा किसी आकस्मिक दुर्घटनावश भीषण त्रासदी खड़ी हो सकती है। अब मेरी यह बात किसी प्रबुद्ध को जँचेगी नहीं परन्तु मैं सावधान करना चाहता हूँ कि यदि यही अंधी दौड़ चलती रही, तो स्टीफन हॉकिंग की भविष्यवाणी निश्चित ही सत्य सिद्ध हो जायेगी। हाँ, यह सत्य अवश्य है कि हॉकिंग स्वयं इस विनाश का कारण नहीं जानते। वे स्वयं अनीश्वरवादी होकर संसार को भोगवादी उच्छ्रंखलता की ओर प्रेरित कर रहे हैं तथा इसी उच्छ्रंखलता की पूर्ति हेतु मनुष्य को अन्य ग्रहों वा चांद पर जाने को प्रेरित कर रहे हैं अर्थात् बिना कारण जाने रोग की चिकित्सा करना चाहते किंवा उसे मात्र डराकर अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझे हैं। जैसे किसी सिगरेट पीने वाले व्यक्ति के घर में सिगरेट से आग लग जाए, तब कोई व्यक्ति उसके जलते घर को देखकर सिगरेट पीने वाले व्यक्ति को डराकर उस घर को छोड़कर दूसरे घर में जाने की बात करे परन्तु न तो सिगरेट को आग लगने का कारण माने, न सिगरेट छोड़ने का परामर्श दे और न घर में लगी आग को बुझाने की बात करे, तब इसे क्या माना जाए? यही हॉकिंग कर रहे हैं। क्या हम उस दुर्व्यसनी व्यक्ति को दूसरे घर में भी आग लगाने की स्वच्छन्दता दे दें? **क्या इस स्वच्छन्द मानव को आत्मसंयमी बनाने का विचार भी कोई कथित प्रगतिशीलता का पक्षधर करता है किंवा क्या स्वच्छन्दता ही विकास व प्रगतिशीलता का लक्षण है, भले ही इससे जीवन नष्ट हो जाए?** टैक्नोलॉजी व सुविधाओं के नशे में मस्त मानव अभी तो सुख भोगने में व्यस्त है। जब विनाश निकट होगा, तब रोग इतना बढ़ जायेगा कि दवा भी काम नहीं आयेगी। **वैज्ञानिकों को चाहिये कि वे अपनी अनुसंधान प्रक्रिया व उद्देश्यों पर भी अनुसंधान करने का प्रयास करें।**

अब मैं एक और प्रदूषण जिसकी कल्पना भी किसी को नहीं है, के विषय में भी सचेत करना चाहता हूँ। वह सर्वाधिक सूक्ष्म प्रदूषण है- वैचारिक प्रदूषण। हिंसा, क्रोध, ईर्ष्या, अतिकामुकता, शोक, पीड़ा से ग्रस्त प्राणी के मस्तिष्क से उत्सर्जित सूक्ष्म तरंगें न केवल प्राणिजगत् अपितु जड़ जगत् पर भी अपना गम्भीर परन्तु सूक्ष्म प्रभाव डालती हैं। मांसाहार, हिंसा, अपराध, यौन उच्छ्रंखलता का जब तक इस विश्व में साम्राज्य रहेगा, तब तक संसार का जलवायु व अन्न कभी स्वस्थ रूप प्राप्त नहीं कर सकते। दुर्भाग्य से इन मानसिक रोगों से भ्रान्त कथित प्रबुद्ध ही आज संसार में धरती बचाने की बात कर रहे हैं और वे ही संसार के नायक बने हैं।

बन्धुवर! ध्यान रहे, जब तक यह जड़वादी मनुष्य स्वयं को मात्र यन्त्रवत् मानकर भोगादि व्यवहारों में लिप्त रहेगा तथा कथित अध्यात्मवादी ईश्वर व जीवात्मा की वैज्ञानिकता को यथार्थ में समझकर तदनुकूल एक धर्म की ओर प्रवृत्त नहीं होंगे, तब तक मानव तथा प्राणिमात्र को पूर्ण सुख कदापि नहीं मिल सकेगा। इन पांच प्रकार के प्रदूषणों से बचने का एकमात्र उपाय है- वैदिक ज्ञान-विज्ञान व अध्यात्म की पुनः स्थापना। गोघृत से यज्ञ, जैव-उर्वरक, गो-आधारित कृषि, वैदिक सदाचारपूर्वक शारीरिक श्रम की उपयोगिता, प्रदूषणरहित एवं अत्यावश्यक टैक्नोलॉजी, भोगवाद के स्थान पर त्यागवाद का मार्ग, आयुर्वेद-व्यायाम व ब्रह्मचर्य पर आधारित स्वास्थ्य विज्ञान, शुद्ध विचार, शुद्ध आहार, शुद्ध व्यवहार आदि को अपनाकर ही इस पृथिवी को बचाया जा सकता है। मैं समझता हूँ कि नाना मत, पंथों, संप्रदायों, भाषाओं, क्षेत्रों व जातियों में बंटा यह विश्व वेद वा ऋषियों की बात नहीं मानेगा। इसका उपाय भी मेरे पास है। **शीघ्र ही ऐतरेय ब्राह्मण का मेरा वैज्ञानिक व्याख्यान ''वेद विज्ञान-आलोक'' संसार के सम्मुख आने वाला है, जिसके आधार पर विश्व अपने-२ आग्रहों, विचारों, मतों तथा आधुनिक विज्ञान की आधुनिकतम मान्यताओं पर पुनर्विचार करने को बाध्य होगा।** इससे संसार के वैज्ञानिक प्रतिभासम्पन्न प्रबुद्धों को ईश्वर के अस्तित्व व स्वरूप की वैज्ञानिकता तथा सृष्टि रचना व संचालन की उसकी वैज्ञानिक प्रक्रिया का बोध होकर धर्म की वैज्ञानिकता का बोध होगा। इसके साथ ही सभी धर्माचार्यों को अपने-२ सम्प्रदायों को वैज्ञानिक कसौटी पर कसने का मार्ग सूझेगा। इससे साम्प्रदायिक व जातीय वैर विरोध मिटकर मानव एकता व प्राणिकल्याण का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा। उस समय पृथिवी को बचाने का ऋषियों व वेदानुकूल मार्ग सबको दिखाई दे सकेगा अन्यथा विनाश के मार्ग पर हम आगे जा ही रहे हैं।

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक, वैदिक वैज्ञानिक
अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास एवं आचार्य, वेद विज्ञान मन्दिर
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
भागलभीम, भीनमाल, जिला-जालोर (राजस्थान) भारत पिन- 343029
दूरभाष- 02969 292103, 09829148400
Website : www.vaidicscience.com, E-mail : swamiagnivrat@gmail.com